International Journal of Applied Research 2020; 6(4): 362-363

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(4): 362-363
www.allresearchjournal.com
Received: 06-02-2020
Accepted: 09-03-2020

डा० शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Correspondence Author:
डा० शीतल कुमारी
पूर्व गवेषिका, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

अमरजीक इतिहास ओ समालोचना

डा० शीतल कुमारी

सारांशः
मैथिलीमे इतिहास लेखन भेल अछि, परंच एखनहुँ ई दुर्बल स्थितिमे अछि। तकर कारण ई जे इतिहास लिखब श्रमसाध्य होइछ तेँ कोनो साहित्यमे आन–आन विधा यथा– कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, संस्मरण आदिक अपेक्षा इतिहास कम लिखल जाइत अछि। मुदा एहिसँ साहित्यक विकासक गति अवरुद्ध भऽ जात छैक, जे एकटा इतिहास कार लिखि गेलाह, परवर्त्ती पाठक ओकरे मानैत गेल छथि। ई सत्य थिक जे कविता, कथा, उपन्यास, नाटक इत्यादि सर्जनात्मक विधा थिक, एहिसँ कोनो भाषाक समृद्धि होइत छैक, मुदा सर्जनात्मक साहित्यक लेखा–जोखा, ओकर गुणवत्ता एवं महत्वकेँ परखबाक आवश्यक कार्य इतिहासे द्वारा सम्भव भऽ पबैत अछि।
इतिहासोक विषय–वस्तु बहुत प्रकारक होइत अछि जेना–कोनो साहित्यक इतिहास, कोनो काल अवधिक इतिहास, कोनो संस्था स मितिक इतिहास आदि। आधुनिक मैथिली साहित्यमे इतिहास लेखनक आरम्भ डा. जयकान्त मिश्र कयलनि– 'मैथिली साहित्यक इतिहास' लिखि कऽ। ओकर बाद एहिमे आरो–आरो नाम जुटैत गेल। ई पहिने अंगरेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहासकेँ दू भागमे प्रकाशित करौलनि आ बादमे दुनू सम्मिलित भऽ प्रकाशित भेल। एकर बाद कृष्णकान्त मिश्र, राधाकृष्ण चौधरी, बालगोविन्द झा 'व्यथित', डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश', डा. दिनेश कुमार झा, पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आदिक नामोल्लेख कयल जा सकैत अछि।
अमरजी द्वारा लिखित इतिहास विषयक दूटा पोथी अछि– मैथिली साहित्य परिषद्क इतिहास (1969) एवं मैथिली महास भाक इतिहास (1999)।
एकर स्थापनाक सम्बन्धमे लेखकक कथन छनि– ''मैथिली साहित्य परिषदक जन्म सम्बन्धी दू तरहक सूचना भेटैत अछि। परिषद् द्वारा सर्वप्रथम प्रकाशित मिथिला–दर्शन नामक ग्रन्थमे प्रधानमन्त्रीक वक्तव्यमे 1930 ई. एवं बाबू भोलालाल दास अपन एक संस्मरणमे 1930 ई. लिखैत छथि तथा श्री शशिनाथ चौधरीजी ओही ग्रन्थमे दोसर ठाम 1931 ई. लिखैत छथि। हम एहि निष्कर्षपर पहुँचलहुँ अछि जे 1931 ई. मे एकर पहिल अधिवेशन भेल छल जकर अध्यक्षता कुमार गंगानन्द सिंह जी कयने छलाह। तेँ एकर जन्म 1930 मे भेल...''(1)
एहि पुस्तकक सम्बन्धमे अमरजी लिखैत छथि जे 1944–46 केर अवधिमे मैथिली साहित्य परिषद् दरभंगा नामे ई संस्था रजिस्टर्ड भेल छल, किन्तु समय पर पदाधिकारी निर्वाचनमे भेल परिवर्त्तनक सूचना विभागकेँ नहि पठाओल जयबाक कारणेँ ओ रजिस्ट्रेशन प्रभावहीन भऽ गेल छल जकरा पुनरुज्जीवित कयल गेल बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह जीक अध्यक्षताक अवधिमे, परन्तु 1954 ई. मे जे आगरामे परिषदक विशेष अधिवेशन भेल तहियासँ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा नामे ई संस्था सम्बोधित होमय लागल।(2)
एहि पुस्तकक सम्बधमे लेखकक कथन छनि जे 1930 ई. सँ 1968ई. धरिक अवधिक जे किछु विवरण प्राप्त भऽ सकल अछि ताहि आधार पर इतिहासक रेखा मात्र खिचा सकल अछि। एकर अंगक विस्तार ओ रंगक निखार तँ तखन सम्भव होयत जखन उपलब्ध सामग्रीक सुसम्पादित संस्करण होयत।(3)
एहि पुस्तकक सम्बन्धमे लेखक स्वयं कहैत छथि जे कोनो जातीय संगठनक इतिहास प्रस्तुत करबाक सम्भवतः ई पहिल छोट–छीन प्रयास थिक। एकरे आगूक कड़ी थिक ''अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद'' जे एकर अंग रूपमे स्थापित भऽ पल्लवित–पुष्पित भेल। एकर स्थापना 1910 ई. मे महाराज रमेश्वर सिंह द्वारा भेल आ ओ एकर आजीवन सभापति रहलाह। ई एकटा जातीय संस्था छल जकरा सांस्कृतिक संगठन सेहो कहल जा सकैत अछि।
एहि संस्थाक स्थापनाक सम्बन्धमे लेखक लिखैत छथि– ''....शिथिल होइत शास्त्रीय मर्यादा ओ सामाजिक बन्धनकेँ सुदृढ़ रखबाक तथा पारस्परिक विरोध भावकेँ शमित करबाक प्रयास आवश्यक बुझि एक सार्वजनिक मंच बनयबाक प्रेरणा भेल होइनि से सम्भव प्रतीत होइछ।

मैथिल महास भाक कार्यप्रणालीक सम्बन्धमे लिखलनि अछि जे उपसमितिक बैसकमे जे प्रारूप तैयार कयल गेल ओ दूइए दिनक वाद–विवादक बाद कार्य रूपमे आयल जे एहि प्रकारेँ अछि–

(क) परम्प राक रक्षा पूर्वक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास ओ अध्ययन

(ख) मिथिलाक संस्कृतिक संरक्षणार्थ–

- (i) संस्कृतक प्रचार ओ प्रसार
- (ii) मिथिला भाषा, साहित्य एवं लिपिक सरंक्षण–संवर्धन
- (iii) कर्मकाण्ड एवं पंजी–व्यवस्थाक दृढ़ीकरण तथा पंजी व्यवस्थाक वैज्ञानिक अनुशीलन

(ग) समस्त देशक मैथिल समाज मध्य सांस्कृतिक एकसूत्राताक स्थापना

(घ) राष्ट्रीय हितक आविरोधेन मिथिला मैथिल मैथिलीक हित–साधन [4]

एहि पुस्तकमे एकठाम चर्च कयल गेल अछि जे 24–28 दिसम्बर 1954के महासभाक 43म अधिवेशन आगरामे भेल छलैक एहिमे 28 दिसम्बरक दिन खास कऽ महिला सम्मेलन भेल छलैक जाहिमे स्वागतमन्त्रिणी छलथि श्रीमती भगवानदेवीझा (साहित्य शास्त्री, बी. ए.) ओ स्वागत कयलथिन स्वरचित श्लोकसँ जाहिमे सीताक वन्दना कयल गेल अछि–

''नारी ललामा शुभ लक्षणा च सीता समस्ता मिथिला विद्यात्री
जाता विदेहस्य कुले हि भाग्यता तस्यै जनन्यै नतमस्तकाऽस्मि।''[5]

जाहि उद्देश्यसँ एकर स्थापना कयल गेल छलैक से पूर्ण रूपसँ सफल नहि भऽ सकल। एकर प्रगतिमे अनेक अवरोध उत्पन्न होइत रहलैक। नाम तँ एकर व्यापक छल मुदा परिधि संकीर्ण। एहि सम्बन्धमे लेखक सेहो कैक ठाम एकर चर्च कऽ चुकल छथि। देखल जाय– ''....महासभाक मात्र दू गोट अधिवेशन भेल छल, तखनेसँ अनेक प्रकारक वैमत्य, कार्यमे शैथिल्य, पारस्परिक अविश्वास, आर्थिक शुचिताक प्रति सन्देह ओ मतमतान्तर दृष्टिगोचर होमय लागल छल। यद्यपि एकर जे कार्य योजना छलैक तकर कार्यान्वयन यदि निष्ठापूर्वक ओ तत्परतासँ होइतैक तँ जौं नहि सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्रक निवासी तँ कमसँ कम ब्राह्मण तथा कर्णकायस्थ ई दू गोट जाति एक संगठित शक्तिक रूपमे अवश्य उभरि सकैत छल।''[6]

एहि तरहेँ हम कहि सकैत छी जे एहि पुस्तकक माध्यमसँ पाठक वर्गकेँ अखिल भारतीय मैथिल महासभाक इतिहासक पूर्ण जानकारी भेटैत अछि। एकर माध्यमसँ महासभाक स्थापना, क्रियाकलाप, शिथिलता ओ एकर ह्रास इत्यादिक जानकारी देबामे अमरजी पूर्ण सफल भेलाह अछि।

एहि पुस्तक ओ एकर लेखकक सम्बन्धमे श्री अशोक कुमार ठाकुर 'अमर अर्चना'मे लिखैत छथि–

''एहि संस्थाक मूल सिद्धान्तक वैचारिक रूपेँ अमरजी विरोधी रहथि तथापि एकर सदस्य बनल रहलाह। एकर जे कोनो अधिवेशन भेल ताहिमे सक्रिय सहयोग देलनि, एहि मृतप्राय संस्थामे एखनो जान फूकि पुनः नव विचारधारा दिस अनबाक प्रयास कयलनि आ कऽ रहल छथि। एहन संस्थाक इतिहास लिखब साहसिक निर्णय छल। ओ सेहो कऽ कऽ देखौलनि।''[7]

निष्कर्ष:

अस्तु, कहि सकैत छी जे एहि माध्यमसँ तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, धार्मिक आदि विकृति विसंगतिक उपस्थापन कैलनि अछि। भारत वर्षक राजनीतिक साहित्यिक स्थिति की छलैक तकरो सभपर व्यंग्य कैल गेल अछि। अतः कहि सकैत छी जे ई पुस्तक सब अपना आपमे ओहि समयक इतिहासकेँ समेटने अछि। अमरजीकेँ सर्जनात्मक विधाक रचनामे तँ सिद्धि प्राप्त छनिहेँ आलोचनामे सेहो कलम साधल छनि। आलोचकक जाहि–जाहि गुणक चर्च होइत अछि सब गुण हिनकापर घटित होत अछि।

संदर्भ सूची:

1. मैथिली साहित्य परिषदक संक्षिप्त इतिहास, श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नवरत्न गोष्ठी, दरभंगा, 1969, पृ.–85
2. तथैव, पृ.– 1 एहि संदर्भमे
3. तथैव, पृ.– 1 एहि संदर्भ
4. अखिल भारतीय मैथिली महासभाक इतिहास, श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', अखिल भारतीय मैथिली महासभा, दरभंगा, 1999, 7
5. तथैव, पृ.– 10
6. तथैव, पृ.– 60
7. श्रीअमर अर्चना, सं. डॉ. मदनेश्वर मिश्र, डॉ. जयमन्त मिश्र, डॉ. सुरेश्वर झा, श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' अभिनन्दन ग्रन्थ समिति, दरभंगा, 2001, पृ.– 53